# अलसी की उन्नत खेती

अलसी तिलहन फसलों में दूसरी महत्वपूर्ण फसल है। अलसी का सम्पूर्ण पौधा आर्थिक महत्व का होता है। इसक तने से लिनेन नामक बहुमूल्य रे"ाा प्राप्त होता है और बीज का उपयोग तेल प्राप्त करने के साथ–साथ औषधीय रूप में किया जाता है। आयुर्वेद में अलसी को दैनिक भोजन माना जाता है। अलसी के कुल उत्पादन का लगभग 20 प्रति"ात खाद्य तल के रूप में तथा शेष 80 प्रति"ात उद्योगों में प्रयोग होता है। अलसी का बीज ओमेगा–3 वसीय अम्ल 50 से 60 प्रति"ात पाया जाता है। साथ ही इसमें अल्फा लिनोलिनिक अम्ल, लिग्नेज, प्रोटीन व खाद्य रे"ाा आदि। ओमेगा–3 वसीय अम्ल मधुमेह गठिया, मोटापा, उच्च रक्तचाप, कैंसर, मानसिक तनाव (डिप्रेषन), दमा आदि बीमारियों में लाभदायक होता है।

## भूमि

अलसी की फसल के लिए काली भारी एवं दोमट मटियार मिट्टी उपयुक्त होती है। अधिक उपजाऊ मृदाए अच्छी समझी जाती हैं। भूमि में उचित जल निकास का प्रबंध होना चाहिए।

## बुवाई का समय :

असिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम पखवाडे तथा सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड में ।

## बीज एवं बीजोपचार :

अलसी की बुवाई 20 से 25 किग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से करनी चाहिए।

बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम की 2.5 से 3 ग्रा. मात्रा प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए ।

किस्म – आर.ल.सी––92, दीपिका, इंदिरा अलसी–113

## उर्वरकों की मात्रा :

असिंचित क्षेत्र के लिए नाइट्रोजन 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस 20 कि.ग्रा. एवं 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर

सिंचित क्षेत्रों में 60 किग्रा. नाइट्रोजन व 30 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं पोटाश प्रति हैक्टेयर

जल प्रबंधन : प्रथम सिंचाई – शाखा फूटते समय

द्वितीय सिंचाइ – दाने बनते समय

सिंचाई के साथ–साथ प्रक्षेत्र में जल निकास का भी उचित प्रबंध होना चाहिए।

## अलसी के प्रमुख कीट :

| प्रमुख कीट | प्रबन्धन |
|---|---|
| कलिका मख्खी | इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. की 1 मि.लि./ली– |
| फल भेदक कीट | |

## अलसी के रोगः

| प्रमुख रोग | प्रबन्धन |
|---|---|
| गेरुआ रस्ट | 15 से 20 किलोग्राम गंधक/हे– |
| उकठा विल्ट | मैंकोजेब 63 प्रतिशत की 2 ग्राम/ली– पानी |
| पाउडरी मिल्ड्यू | 2.5 किलोग्राम घुलनशील गंधक प्रति हैक्टेयर |

उपज :

अलसी की उपज सामान्तया 20–25 किवंटल प्रति हेक्टयर।